प्राचीन भारत का इतिहास

सिंधु घाटी सभ्यता का नगर नियोजन :-

1. सिंधु घाटी सभ्यता विश्व की प्रथम नगरीय सभ्यता थी।
2. यह नगर नियोजन एवं 'उत्कृष्ट जल निकासी व्यवस्था' के लिए प्रसिद्ध है।
3. नगर दो भागों में बंटे हुए होते थे-
   (i) पूर्वी भाग - जन-सामान्य के लिए
   (ii) पश्चिमी भाग - ऊँचे टीले पर बना होता था जो दुर्गीकृत (चारो ओर चार दिवारी) होता था।
4. नगर 'आयताकार ग्रिड पैटर्न पर बने' (शतरंज बोर्ड) हुए होते थे।
5. सड़के चौड़ी हुआ करती थी।
6. घरों के दरवाजें मुख्य मार्ग पर नहीं खुलते थे।
7. एक घर में सामान्यतः तीन या चार कक्ष खुला आँगन एवं रसोई हुआ करते थे।
8. कुछ घरों में 'कुओं के साक्ष्य' भी मिलतें हैं।
   (मोहनजोदड़ो से 700 लगभग कुएँ मिलतें हैं)
9. घरों में सीढियों का निर्माण किया जाता था। उन्हें सीढ़ियों के निर्माण का ज्ञान था।
10. मानकीकृत पक्की ईंटों का प्रयोग करते थें। ईटों का आकार 4×2×1 होता था।
11. शहरों में उत्कृष्ट जल निकासी व्यवस्था थी एवं नालियों को ईटों से ढ़का जाता था।
12. नालियों की सफाई हेतु मेन हॉल का निर्माण किया जाता था।

मूर्तिकला एवं मोहरें/मुहरें

1. सिंधु सभ्यता के समय 'धातु, शेलखड़ी (पत्थर), मृण/मिट्टी (टेराकोटा)' की मूर्तियाँ मिलती है।
2. मोहनजोदड़ो से 'धातु की नृर्तकी' की मूर्ति प्राप्त होती है। जिसने एक हाथ में चूड़ियाँ पहन रखी है।
3. मोहनजोदड़ों से 'शेलखड़ी की पुरोहित राजा की मूर्ति' प्राप्त होती है। जो ध्यान की अवस्था में है।
4. दैमाबाद (दायमाबाद) से धातु का रथ मिलता है।
5. हड़प्पा से इक्कागाड़ी मिलती है।
6. मोहनजोदडो से 'पशुपतिनाथ की मुहर' मिलती है। जो शेलखड़ी से बनी हुई है।
   ज्यादातर मुहरें वर्गाकार व त्रिकोणीय होती थी।
   मुहरें स्वामित्व व वस्तुओं की गुणवत्ता की जानकारी देती थी।
7. बड़ी मात्रा में मातृदेवीयों की मृण्मूर्तियाँ मिलती है।

लिपि

1. सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों को लिपि का ज्ञान था।
2. इसमें 375-400 तक चिन्हों का प्रयोग किया जाता था।
3. यह लिपि दायें से बायें लिखी जाती थी।
4. यह भावचित्रात्मक लिपि थी। (चित्रक्षय लिपि)
5. इसे 'गौमूत्राक्षर लिपि' कहा जाता है।

6. अभी तक इस लिपि को पढ़ा नहीं जा सका है।
7. अभिलेखों में (अभी तक मिले) सबसे बड़े अभिलेख में 17 चिन्हों का प्रयोग किया गया है।

हड़प्पा

1. स्थिति - मोंटगोमरी जिला पंजाब, पाकिस्तान
   वर्तमान में 'साहीवाल जिले' में स्थित।
2. रावी नदी के तट पर
3. उत्खननकर्त्ता - दयाराम साहनी
4. मिलने वाली वस्तुएँ
   (i) R-37 कब्रिस्तान
   (ii) विदेशी की कब्र (ताबूत में दफनाया गया)
   (iii) 12 अन्नागार
   (iv) इक्कागाड़ी
   (v) स्वास्तिक का चिन्ह
   (vi) शृंगार पेटिका

मोहनजोदड़ो

1. स्थिति - लरकाना जिला, सिंध, पाकिस्तान
2. सिंधु नदी के किनारे स्थित
3. उत्खननकर्त्ता - राखालदास बनर्जी
4. मोहनजोदड़ों का शाब्दिक अर्थ - ''मृतकों का टीला''
5. प्राप्त वस्तुएँ
   (i) विशाल अन्नागार
   (ii) विशाल स्नानागार
   आकार - 39×23×8
   स्नानागार के उत्तर तथा दक्षिण में सीढियाँ बनी हुई है।
   स्नानागार के तल पर बिटुमिनस का लेप किया गया है।
   उत्तर दिशा में 6 कक्ष बने हुए है।
   तीन तरफ बरामदे है। बरामदों के पीछे कई कक्ष बने हुए है।
   जल आपूर्ति हेतु कुएँ का निर्माण किया गया है।
   ऊपर चढ़ने हेतु सीढियाँ बनी हुई है।
   'सर जॉन मार्शल' ने इसे तात्कालिक विश्व का आश्चर्य बताया है।
   यहाँ सामूहिक धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता था।
   (iii) नर्तकी की मूर्ति (कांसे की) - त्रिभंग नृत्य मुद्रा में
   (iv) हाथी का कपाल खण्ड
   (v) सूती कपड़ा
   (vi) मेसोपोटामिया मुहर

(vii) सभागार

कालीबंगा

1. घग्घर नदी के किनारे
2. स्थिति - हनुमानगढ़, राजस्थान
3. उत्खननकर्त्ता - अमलानंद घोष
   बी.बी.लाल
   बी.के.थापर
4. मिलने वाली वस्तुएँ
   (i) बड़ी मात्रा में काली चूडियाँ
   (ii) जुते खेत के साक्ष्य
   (iii) दोहरी फसलों के साक्ष्य
   (iv) कच्ची ईंटें व अलंकृत ईंटे
   (v) लकड़ी की नालियाँ
5. यहाँ नाली व्यवस्था का अभाव है।
6. यहाँ एक खोपड़ी मिलती है जिसमें छः छेद है।
7. इन्हें शल्य चिकित्सा का ज्ञान था।
8. यज्ञ वेदिका या हवन कुण्ड के साक्ष्य मिलते है।

लोथल :-

1. स्थिति - भोगवा नदी के किनारे, गुजरात
2. उत्खननकर्त्ता - एस.एस.राव/S.R. राव/ रंगनाथ राव
3. यह एक व्यापारिक नगर था।
4. यहाँ से गोदीवाड़ा मिला है।
5. चावल के साक्ष्य मिलते है।
6. घोड़े की मृण्मूर्तियाँ मिलती है।
7. यहाँ से फारस की गोल मुहर मिलती है। (बटननुमा)
8. मनके बनाने का कारखाना मिलता है।
9. शतरंज बोर्ड मिलता है।

चन्हूदडों :-

1. स्थिति - सिंध, पाकिस्तान
2. यह एक औद्योगिक नगर था।
3. उत्खननकर्त्ता - एन.जी. मजूमदार (डाकूओं ने हत्या कर दी)
4. मनके बनाने के कारखाने मिलते है।

कुनाल :- हरियाणा

1. चाँदी के दो मुकुट मिलते है।

दैमाबाद/दायमाबाद, महाराष्ट्र :- यहाँ से धातु का रथ मिलता है।

वैदिक काल (1500 BC – 600BC)

1500-1000 BC → ऋग्वेद

1000-600 BC → 3 वेद की रचना

1. वेद, ब्राह्मण — कर्म; आरण्यक, उपनिषद — ज्ञान — वैदिक साहित्य/श्रुति साहित्य
2. वेदांग, स्मृति, पुराण, रामायण, महाभारत — यह वैदिक साहित्य का अंग नहीं है।
3. वेद :-
   - शाब्दिक अर्थ 'ज्ञान'
   - वेदों की रचना आर्यों ने की।
   - आर्य का शाब्दिक अर्थ 'कुलीन या श्रेष्ठ वर्ग' होता है।
   - वेदों के मंत्रों की रचना करने वाले को 'दृष्टा' कहा जाता है।
   - महिलाओं ने भी वैदिक मंत्रों की रचना की है एवं उन्हें ऋषि कहा जाता है।
   - वेदों का संकलन 'कृष्णद्वैपायन वेदव्यास' ने किया है।
   - वेदों की संख्या चार है।

1. ऋग्वेद
   - 10 मण्डल
     1028 सूक्त
     10600 श्लोक मंत्र
   - प्रथम एवं दसवां मण्डल बाद में जोड़े गये है।
   - दूसरे से सातवें मण्डल को परिवार मण्डल/वंशमण्डल कहा जाता है।
   - तीसरे मण्डल में गायत्री मंत्र का उल्लेख मिलता है।
     गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की है।
     यह सविद्र/सावितृ (सूर्य) को समर्पित है।

- सातवें मण्डल में दशराज्ञ/दशराजन युद्ध का उल्लेख मिलता है।

कबीला-भरत	v/s	10 कबीले
शासक-सुदास		विश्वामित्र-पुरोहित
पुरोहित-वशिष्ठ		

- रावी नदी के जल पर अधिकार को लेकर यह युद्ध लड़ा गया था।
- आठवें मण्डल में ऋषि महिलाओं के नामों का उल्लेख है।
  जैसे -
  घोषा
  सिक्का
  अपाला
  विश्वरा
  लोपामुद्रा
  काक्षावती
- नौवा मण्डल 'सोम' को समर्पित है।
  सोम का निवास स्थान 'मुजवन्त' (हिमालय पहाडियाँ) है।
- दसवें मण्डल के पुरूष सूक्त में शुद्र शब्द का उल्लेख मिलता है।
- दसवें मण्डल के नासदीय सूक्त में निर्गुण भक्ति का उल्लेख मिलता है।

आयुर्वेद-उपवेदः- मंत्रों का उच्चारण करने वाले को होतृ/होता कहते है।

2. यजुर्वेद

कृष्ण यजुर्वेद	शुक्ल यजुर्वेद इसे 'वाजसनेई/वाजसनीय संहिता' भी कहा जाता है।

- यजुर्वेद गद्य एवं पद्य में लिखा गया है।
- यजुर्वेद में यज्ञ करने की विधियों का उल्लेख मिलता है।
- यजुर्वेद में शून्य का उल्लेख मिलता है।
- मंत्रो का उच्चारण करने वाला 'अध्वर्यु' कहलाता है। ,
- उपवेद - धनुर्वेद

3. सामवेद :-

- भगवान कृष्ण का प्रिय वेद
- संगीत का प्राचीनतम स्रोत - इसमें ऊँचे स्वर में गाये जाने वाले मंत्रों का उल्लेख मिलता है।
- मंत्रों का उच्चारण करने वाला 'उद्गाता'
- उपवेद-गन्धर्ववेद

4. अथर्ववेद :-

- इसे महीवेद
  भैषज्यवेद
  अथर्वा अंगिरस - वेद भी कहा जाता है।
- यह भौतिकवादी वेद है।
- इसमें जादू, टोने, टोटके एवं चिकित्सा पद्धतियों का उल्लेख मिलता है।
- मंत्रों का उच्चारण करने वाला 'ब्रह्म'
- उपवेद - शिल्पवेद

वेदत्रयी :- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद

ब्राह्मण साहित्य :-

ऋग्वेद - 1. ऐतरेय ब्राह्मण 2. कौषितकी ब्राह्मण

यजुर्वेद - 1. शतपथ ब्राह्मण 2. तैतिरीय/तैतरेय ब्राह्मण

सामवेद - 1. पंचविश ब्राह्मण 2. षड्विश ब्राह्मण जैमिनीय ब्राह्मण

अथर्ववेद 1. गोपथ ब्राह्मण

आरण्यक :- कर्मकांडीय/यज्ञखण्ड

- इनकी रचना जंगलों में या वनों में की गई थी।
- विषयवस्तु - रहस्यात्मक ज्ञान एवं दार्शनिक तत्व

उपनिषद :- गुरू शिष्य परम्परा का अंग, अर्थ-शिक्षक के समीप बैठना

- यह वैदिक साहित्य का अंतिम भाग है। इसलिए इसे 'वेदान्त' भी कहा जाता है।
- इनकी संख्या 108 है।
- विषयवस्तु - रहस्यात्मक ज्ञान एवं दार्शनिक तत्व
- उपनिषदों में कर्मकाण्डों की आलोचना की गई है।

उदा.

(i) कठोपनिषद/कठ उपनिषद :- इसमें यम व नचिकेता का संवाद मिलता है एवं कर्मकाण्ड की आलोचना की गई है।

(ii) जाबालोपनिषद/जाबाल उपनिषद :- चार आश्रमों का उल्लेख मिलता है।

(iii) छादोग्य उपनिषद :- भगवान श्री कृष्ण का पहला उल्लेख मिलता है।
कृष्ण को देवकी का पुत्र एवं अंगीरस का शिष्य बताया गया है।
इसमें बौद्ध धर्म का पंचशील सिद्धान्त मिलता है।

(iv) वृहदारण्यक उपनिषद :-
1. यह सबसे बड़ा उपनिषद है।
2. इसमें गार्गी एवं याज्ञवल्यक का संवाद मिलता है।

(v) मुण्डकोपनिषद :- इससे 'सत्यमेव जयते' लिया गया है।

(vi) तैतरेय उपनिषद :- बौद्ध धर्म के अष्टांगिक मार्ग का उल्लेख मिलता है।

वेदांग

1. वैदिक साहित्य को समझने हेतु वेदांग साहित्य की रचना की गई है।
2. इनकी संख्या '6' है।
   (i) शिक्षा
   (ii) व्याकरण
   (iii) ज्योतिष
   (iv) कल्प
   (v) छन्द
   (vi) निरूक्त निघण्टु (जटिल शब्दों को समझाने हेतु)

पुराण

1. शाब्दिक अर्थ 'प्राचीन आख्यान'
2. इनकी संख्या '18' है।
3. पुराणों की रचना 'लोमहर्ष एवं उग्रश्रवा' ने की।
4. पुराणों में ऐतिहासिक जानकारियाँ मिलती है।
5. सर्वप्रथम पार्जीटर ने पुराणों के ऐतिहासिक महत्व को बताया।

- मत्स्य पुराण - शुंग एवं सातवाहन शासकों की जानकारी मिलती है।
- विष्णु पुराण - मौर्य वंश की जानकारी प्राप्त
- वायु पुराण - गुप्त वंश की जानकारी प्राप्त
- मार्कण्डेय पुराण - दुर्गा सप्तशती मिलती है।

स्मृति साहित्य

मनु स्मृति - प्राचीनतम स्मृति
वर्णव्यवस्था का उल्लेख
टीकाकार - भारूची, कुल्लक भट्ट, गोविन्दराज, मेघातिथि।

- स्मृति साहित्य को धर्म साहित्य कहा गया है।
- जर्मन दार्शनिक नीत्शे कहता है कि बाइबिल को जला दो और मनुस्मृति को अपनाओ।
- याज्ञवल्क्य स्मृति - टीकाकार - विश्वरूप, विज्ञानेश्वर, अपरकि
- कात्यायन स्मृति - आर्थिक गतिविधियों की जानकारी मिलती है।
- नारद स्मृति - इसमें दासों की मुक्ति एवं कल्याण का उल्लेख किया गया है।

धार्मिक क्रांति

बौद्ध धर्म –

- संस्थापक – गौतम बुद्ध, जन्म – 563 BC
- नाम – सिद्धार्थ
- पिता – शुद्धोधन
- माता – महामाया
- सौतेली माता – प्रजापति गौतमी (बुद्ध का पालन-पोषण किया)
- कुल – शाक्य (शाक्यमुनि – नाम से पुकारते थे)
- गौत्र – गौतम
- पत्नी – यशोधरा
- बेटा – राहुल
- गृह त्याग – 29 वर्ष की अवस्था में
  1. गुरू – आलारकलाम – सांख्य दर्शन के आचार्य थे।
  2. गुरू – रामपुत
- सुजाता नामक लडकी ने बुद्ध को खीर खिलायी थी।
- 35 वर्ष की अवस्था में बोधगया में निरंजना नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- सिद्धार्थ शाक्यमुनि व गौतम बुद्ध के रूप में प्रसिद्ध हुए।
- प्रिय शिष्य – आनंद
- प्रमुख शिष्य – उपालि
- बुद्ध के प्रतीक –

(पाली भाषा का शब्द)

गर्भस्थ	– सफेद हाथी
जन्म	– कमल एवं सांड
महाभिनिष्क्रमण	– घोड़ा (अर्थ-घर छोड़ना)
ज्ञान प्राप्ति	– बोधिवृक्ष
निर्वाण	– पद्चिन्ह
मृत्यु	– स्तूप
सम्बोधि	– ज्ञान प्राप्ति
धर्मचक्र प्रवर्तन	– सारनाथ में प्रथम उपदेश एवं संघ की स्थापना।
महापरिनिर्वाण	– मृत्यु 80 वर्ष की अवस्था में कुशीनारा में मृत्यु (कुशीनगर)

- **बौद्ध धर्म की शिक्षायें :-**
  1. 4 घटनाओं ने बुद्ध के जीवन को प्रभावित किया-
     (i) वृद्ध व्यक्ति
     (ii) बीमार व्यक्ति
     (iii) मृत व्यक्ति
     (iv) सन्त/फकीर

2. 4 आर्य सत्य -
   (i) दुःख है।
   (ii) दुख का कारण है।
   (iii) दुख के कारण का निवारण है।
   (iv) दुख निवारण का मार्ग है। (अष्टांगिक मार्ग)

- अष्टांगिक मार्ग :- भगवान बुद्ध ने चौथे आर्य सत्य के तहत इसका प्रतिपादन किया है। यदि अष्टांगिक मार्ग का पालन किया जाये तो निर्वाण की प्राप्ति होती है-
  1. सम्यक दृष्टि
  2. सम्यक संकल्प
  3. सम्यक वाक्
  4. सम्यक कर्मान्त
  5. सम्यक आजीव
  6. सम्यक व्यायाम
  7. सम्यक स्मृति
  8. सम्यक समाधि
- प्रतीत्य समुत्पाद : यह बौद्ध धर्म का (कार्यकारण) कारणता सिद्धान्त है।
- भगवान बुद्ध ने इसे ''द्वादश निदान चक्र'' द्वारा समझाया है।
- बुद्ध के अनुसार दुःखों का कारण अविद्या या अज्ञान है।
- भगवान बुद्ध ने इसे दूसरे आर्य सत्य के तहत समझाया है।
- क्षणिकवाद/अनित्यवाद :-
  1. भगवान बुद्ध के अनुसार इस जगत की सभी वस्तुओं का अस्तित्व क्षणभर के लिए होता है एवं सभी वस्तुएँ अनित्य होती है।
  2. सभी वस्तुओं में प्रति क्षण बदलाव होते हैं लेकिन हम इस बदलाव को समझ नहीं पाते है क्योंकि हमारी बुद्धि अत्यन्त धीमी होती है।
  3. भगवान बुद्ध के अनुसार हम एक नदी में दो बार स्नान नहीं कर सकते।
- अनात्मवाद :-
  1. भगवान बुद्ध नित्य आत्मा को नहीं मानते हैं।
  2. बुद्ध के अनुसार विज्ञान व विचार का प्रवाह ही आत्मा है।
  3. विज्ञानों के प्रवाह का पुनर्जन्म होता है।
- बौद्ध धर्म कर्म के सिद्धान्त एवं पुनर्जन्म में विश्वास करता है।
- भगवान बुद्ध निर्वाण, ईश्वर, परमतत्व के प्रश्न पर मुस्कुरा दिया करते थे।
- बौद्ध धर्म अनीश्वरवादी धर्म है।
- निर्वाण
  - इसका शाब्दिक अर्थ 'बुझ जाना' होता है।
  - जब हमारे विज्ञान बुझ जाते है उसी अवस्था को निर्वाण कहा गया है।
  - भगवान बुद्ध ने निर्वाण की अवस्था का उल्लेख नहीं किया है।

बौद्ध संगीतियाँ

	समय	शासक	स्थान	अध्यक्ष
1.	483 BC	अजातशत्रु	राजगृह	महाकस्सप (कश्यप)
2.	383 BC	कालाशोक	वैशाली	सर्वकामी साबकमीर
3.	251 BC	अशोक	पाटलिपुत्र	मोग्गलीपुत तिस्स
4.	1st शताब्दी	कनिष्क	कुण्डलवन (कश्मीर)	वसुमित्र-अश्वघोष

प्रथम संगीति :-

1. सुतपिटक की रचना
   - संकलनकर्त्ता - आनंद
   - भगवान बुद्ध की शिक्षाएँ एवं जीवन की घटनाएँ
   - पाठ-खुद्दकनिकाय में जातक कथाएँ मिलती है।
   - जातक कथाएँ - भगवान बुद्ध के पूर्वजन्म की कथाएँ।
2. विनय पिटक
   - रचनाकार - 'उपालि'
   - बौद्ध भिक्षुओं के आचार विचार एवं नियम का वर्णन है।

दूसरी संगीति :-

- बौद्ध संघ दो भागों में विभाजित

स्थविर	महासंघिक
↓	↓
व्यक्तिगत निर्वाण	सामूहिक निर्वाण के समर्थक

तीसरी संगीति :-

- धम्मपिटक की रचना
- बौद्ध दर्शन का वर्णन
- त्रिपिटक -
  - सुतपिटक
  - विनयपिटक
  - अभिधम्म पिटक
  - पिटक का शाब्दिक अर्थ पिटारा होता है।

चतुर्थ संगीति :-

- संघ दो भागों में विभाजित हुआ -

हीनयान	महायान

हीनयान	महायान
1. रूढ़िवादी	1. सुधारवादी
2. भगवान बुद्ध को महापुरूष मानते हैं।	2. भगवान बुद्ध को ईश्वर के रूप में स्वीकार करते हैं।
3. देवी-देवताओं में विश्वास नहीं करते।	3. देवी-देवताओं को मानते हैं। जैसे - तारा प्रज्ञा की देवी
4. मूर्तिपूजा नहीं करते	4. मूर्तिपूजा करते है।
5. व्यक्तिवादी	5. मानवतावादी
6. परमपद् - अर्हत जिनको निर्वाण की प्राप्ति होती है।	6. परमपद - बोधिसत्व
7. पालि भाषा	7. संस्कृत भाषा
8. देश - श्रीलंका, म्यांमार, बर्मा, थाइलैंड, कम्बोडिया, लाओस आदि	8. चीन, जापान, मंगोलिया, कोरिया
9. हीनयान सौतान्त्रिक → संस्थापकः-कुमारलब्ध वैभाषिक → संस्थापक :- वसुमित्र	9. महायान शून्यवाद → संस्थापक - नागार्जुन विज्ञानवाद/योगाचार → मैत्रेय

- नागार्जुन
  - नागार्जुन ने परम तत्व को शून्य बताया है। एवं उसे निर्गुण निराकार, निर्विशेष, निर्वचनीय बताया है।
  - कालान्तर में शंकराचार्य ने भी ब्रह्म की यही विशेषताएँ बतायी है। इसलिए शंकर को प्रच्छन्न बौद्ध कहा जाता है।
  - नागार्जुन को ''भारत का आइन्सटीन'' कहा जाता है, क्योंकि नागार्जुन ने 'सापेक्षता के सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया।
  - मैत्रेय के अनुसार इस जगत में केवल विज्ञान का ही अस्तित्व है।

बौद्ध धर्म का योगदान :-

1. भगवान बुद्ध ने एक सरल एवं आडंबरविहीन धर्म का प्रतिपादन किया।
2. भगवान बुद्ध ने आडम्बरों, अंधविश्वासों एवं कर्मकाण्डों का विरोध किया।
3. वर्णव्यवस्था, जाति व्यवस्था, सामाजिक असमानता का भी विरोध किया।
4. भगवान बुद्ध सामाजिक समानता एवं मानवतावाद के समर्थक थे।

सांस्कृतिक योगदान :-

1. बौद्ध धर्म में चित्रकला का विकास हुआ।
   अजन्ता, एलोरा एवं बाघ की गुफाओं में बौद्ध धर्म से संबंधित चित्र मिलते है।
2. बौद्ध धर्म/दर्शन की शिक्षाओं के प्रचार प्रसार हेतु तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशीला जैसे विश्वविद्यालयों के निर्माण हुए।
3. मूर्तिकला शैली भी विकसित हुई।
   जैसे- गांधार मूर्तिकला, मथुरा, अमरावती मूर्तिकला शैलियों में भगवान बुद्ध से संबंधित मूर्तियों का निर्माण किया गया।
4. बौद्ध धर्म का स्थापत्य में भी योगदान है। इसमें स्तूपों (जैसे-सांची स्तूप, पिपरहवा स्तूप, धमेख स्तूप, अमरावती) चैत्यों (कार्ले-महाराष्ट्र), विहारों (सोमविहार,ओदन्तपुरी विहार) के निर्माण हुए।

- विदेशों यात्रियों (फाहियान, ह्वेनसांग, इत्सिंग) ने भारत की यात्रा की। उनके यात्रा वृतान्तों से हमे ऐतिहासिक जानकारियाँ मिलती है।
- बौद्ध धर्म विदेशों में भी फैला जिससे वहाँ भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसार हुआ।
- बौद्ध धर्म के कारण हिन्दू धर्म ने भी अपने में सुधार किये।
- भगवान बुद्ध ने आर्थिक प्रतिबन्धों को समाप्त किया जिससे आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ी।
- भगवान बुद्ध ने मध्यम मार्ग का प्रतिपादन किया।

बौद्ध धर्म के पतन के कारण :-

- बौद्ध धर्म अनेक शाखाओं में विभाजित हो गया।
- बौद्ध धर्म के संघ धन के केन्द्र बन गये थे जिससे बौद्ध साधुओं के चरित्र का पतन हुआ।
- कालान्तर में बौद्ध धर्म से कालचक्रयान व वज्रयान जैसी शाखाओं का उदय हुआ जो अतिवादी थे एवं माँस, मदिरा, मैथुन में विश्वास करते थे।
- हिन्दू धर्म ने अपने में सुधारवादी आंदोलन चलाये।
- बौद्ध धर्म में भी मूर्तिपूजा तथा कर्मकाण्ड व्याप्त हो गये।
- कुमारिल भट्ट तथा शंकराचार्य ने बौद्ध भिक्षुओं को वाद-विवाद में पराजित किया।
- राजकीय संरक्षण का अभाव
- कालान्तर में सामन्त व्यवस्था का उद्भव हुआ एवं सामन्तों ने बौद्ध धर्म में रूचि नहीं दिखाई।
- राजपूत काल में राजपूत शासक हिंसा के समर्थक थे।
- तुर्क आक्रमण
  बख्तियार खिलजी ने नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालयों को जला दिया था।

जैन धर्म

- संस्थापक - ऋषभदेव/आदिनाथ
- 21 वें गुरू - नेमिनाथ
- 22 वें गुरू - अरिष्टनेमि (कृष्ण के समकालीन)
- 23 वें गुरू - पार्श्वनाथ

❖ केवल 23 वें एवं 24 वें गुरू के ऐतिहासिक साक्ष्य नहीं मिलते है।

पार्श्वनाथ

- पिता - अश्वसेन
- माता - वामा
- सम्मेद पर्वत पर ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- इन्होंने चार व्रत दिये-
  1. सत्य
  2. अहिंसा
  3. अस्तेय (चोरी नहीं करना)

4. अपरिग्रह (संचय नहीं करना)

- 24 वें गुरू – भगवान महावीर स्वामी
  1. इन्हें जैनधर्म का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
  2. बचपन का नाम – वर्धमान
     पिता – सिद्धार्थ
     माता – त्रिशला
     जन्म – 540 BC
     590BC
     पत्नी – यशोदा
     पुत्री – प्रियदर्शना
     भाई – नन्दीवर्मन (इनकी अनुमति से गृह त्याग किया था)
- भद्रबाहु की कल्पसूत्र के अनुसार गृहत्याग के 13 महीने पश्चात भगवान महावीर ने वस्त्र त्याग दिये।
- 42 वर्ष की अवस्था में जुम्बिकाग्राम में ऋजुपालिका नदी के तट पर ज्ञान की प्राप्ति हुई।

गणधर :-

- भगवान महावीर ने सर्वप्रथम 11 ब्राह्मणों को उपदेश दिये जिन्हें गणधर कहा जाता है।
- भगवान महावीर की मृत्यु के समय केवल एक गणधर सुधर्मन जीवित था।
- सुधर्मन ने जैन धर्म का नेतृत्व किया था।

ब्रह्मचर्य :-

- भगवान महावीर ने इस व्रत का प्रतिपादन किया।

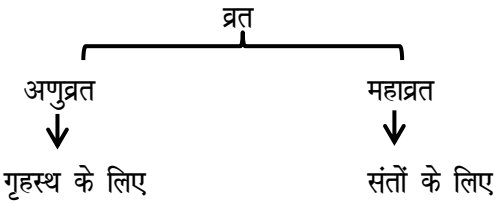

- त्रिरत्न –
  सम्यक् ज्ञान
  सम्यक् दर्शन
  सम्यक् चरित्र (आचरण)
- जीव – जैन दर्शन में चेतन तत्व को (आत्मा को) जीव कहा गया है।
- पुदगल – जैन दर्शन में जड़ तत्व को पुद्गल कहा जाता है।
- बंधन – जब कर्म पुद्गल जीव से चिपक जाते है तो जीव बंधन में पड़ जाता है।
- आस्रव :- जैन दर्शन में जीव की तरफ होने वाले कर्म पुद्गल के प्रवाह को आस्रव कहते है।
- संवर :- जैन दर्शन में जीव की तरफ होने वाले कर्म पुद्गलों के प्रवाह का रूक जाना संवर कहलाता है।
- निर्जरा :- जैन दर्शन के अनुसार जीव से चिपके हुए कर्म पुद्गलों का झड़ना (पृथक होना) निर्जरा कहलाता है।
- मोक्ष :- (मुक्ति)
- जब अंतिम कर्म पुद्गल जीव से अलग हो जाता है तो जीव को मोक्ष मिल जाता है।

- यह अनन्त चतुष्ट्य की अवस्था है।
- अनन्त चतुष्ट्य :- अनन्त ज्ञान
  अनन्त दर्शन
  अनन्त वीर्य (बल)
  अनन्त आंनद
- सल्लेखना (संथारा) :- उपवास द्वारा कर्म फलों को समाप्त करते हुए मृत्यु को प्राप्त होना।
- अनेकान्तवाद :- जैन दर्शन के अनुसार इस जगत में अनेक वस्तुएँ है एवं प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण होते है। यह गुण नित्य एवं परिवर्तनशील होते हैं।
  अर्थात वस्तुओं में नित्यता एवं परिवर्तनशीलता होती है।
  यह जैन दर्शन का 'तत्व मीमांसीय सिद्धान्त' है।

गुण (जैन धर्म) → नित्य, अनित्य → परिवर्तन

गुण (बौद्ध धर्म) → क्षणिक/अनित्य

स्यादवाद :-

- यह जैन दर्शन का ज्ञान मीमांसीय सिद्धान्त है।
- इस जगत में अनेक वस्तुएँ है एवं प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण होते हैं।
- हम ना तो इस जगत की सभी वस्तुओं को पहचान सकते हैं एव ंना ही एक वस्तु के सभी गुणों को पहचान सकते हैं।
- यह ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त है।
- जैन दर्शन में स्यादवाद की सात जन्माधों के उदाहरणों के द्वारा समझाया गया है।

जैन संगीतियाँ :-

	वर्ष	शासक	स्थान	अध्यक्ष-उपाध्यक्ष
1.	298 BC	चन्द्रगुप्त मौर्य	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र - भद्रबाहु
2.	512 AD		वल्लभी, गुजरात	देवार्धि क्षमाश्रमण

प्रथम संगीति :- इसमें जैन धर्म दो भागों में विभाजित हो गया -

दिगम्बर	श्वेताम्बर
1. रूढ़िवादी	1. सुधारवादी
2. भद्रबाहु के अनुयायी	2. स्थूलभद्र के अनुयायी
3. महिलाओं को इस जन्म में मोक्ष का अधिकारी नहीं मानतें	3. महिलाओं का इस जन्म में मोक्ष सम्भव है।
4. 19 वें गुरू मल्लीनाथ को पुरूष मानते है।	4. 19 वें गुरू मल्लीनाथ को महिला मानते है।
5. भगवान महावीर को अविवाहित मानते हैं।	5. भगवान महावीर को विवाहित मानते है।
6. मोक्ष प्राप्ति हेतु वस्त्र त्यागना आवश्यक है।	6. मोक्ष प्राप्ति हेतु वस्त्र त्यागने की आवश्यकता नहीं होती।
7. आगम् को प्रमाणित नहीं मानते (साहित्य)	7. 96 आगम् को प्रमाणित मानते है।

द्वितीय संगीती :-

1. आगम् साहित्य (प्राकृत भाषा) की रचना

आजीवक सम्प्रदाय

प्रतिपादक - मक्खली पुत्त गोशाल

1. यह भाग्यवादी/नियतिवादी सम्प्रदाय है।
2. मक्खली पुत्त तिस्स गोशाल ने महावीर के साथ तपस्या की थी। (समकालीन थे)
3. यह किस्मत या भाग्य में भरोसा करते है।
4. बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
   अनीश्वरवादी धर्म (बौद्ध, जैन, आजीवक) कर्मफल व पुनर्जन्म में विश्वास करते है।

मौर्यकाल

चन्द्रगप्त मौर्य –

1. जैन धर्म का अनुयायी
2. चन्द्रगिरी की पहाड़ी पर (कर्नाटक) पर संल्लेखना द्वारा प्राण त्याग दिये।

✍ श्रवणबेलगोला की बाहुबलि की मूर्ति का निर्माण गंग वंश शासक चामुण्डराय ने करवाया ।

बिन्दुसार – आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी

अशोक मौर्य –

1. कल्हण की राजतंरगिणी के अनुसार यह भगवान शिव का अनुयायी था।
2. इसने श्रीनगर शहर की स्थापना की।
3. झेलम नदी के तट पर उसने शिव मंदिर का निर्माण किया।
4. मोग्गलीपुत तिस्स के कारण यह बौद्ध धर्म के प्रभाव में आया।
5. महावंश एवं दीपवंश के अनुसार, सुसीम के पुत्र निग्रोध ने अशोक की बौद्ध धर्म में दीक्षित किया।
6. दिव्यावदान व ह्वेनसांग के अनुसार, बौद्ध भिक्षु उपगुप्त ने अशोक को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया।
7. भाब्रू अभिलेख के अनुसार, अशोक बौद्ध था तथा वह बुद्ध, संघ एवं धम्म की शरण की बात करता है।

अशोक का धम्म :–

1. कलिंग युद्ध पश्चात अशोक ने धम्म को अपनाया। (शासन के 8वें वर्ष)
2. धम्म बौद्ध धर्म का हिस्सा नहीं था।
3. धम्म एक आचार संहिता थी।
4. धम्म में धर्म की सभी अच्छी बातों को समाहित किया गया था।
5. अशोक ने धम्म यात्राओं का आयोजन करवाया। लेकिन इसमें समस्याओं का हल उसी स्थानों पर किया जाता था।
6. वर्तमान में इसी तर्ज पर प्रशासन आपके द्वार/प्रशासन आपके संग जैसी योजनाएँ सरकार द्वारा संचालित की जाती है।
7. शासन के 13 वें वर्ष में अशोक ने धम्म महामात्र की नियुक्ति की।
8. धम्म की शिक्षाओं को प्रसारित करने के लिए अशोक ने अभिलेख लिखवाए।

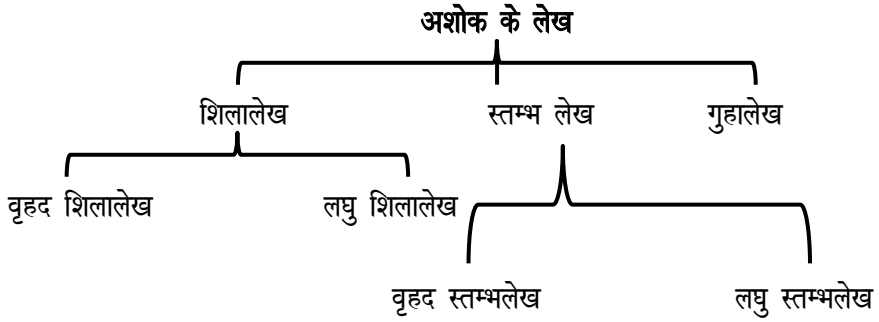

शिलालेख

1. वृहद शिलालेख

(i) शाहबाजगढ़ी
(ii) मानसेरा
(iii) कालसी, उत्तराखण्ड
(iv) जूनागढ़, गिरनार, गुजरात
(v) सोपारा, महाराष्ट्र
(vi) धौली } ओड़िशा
(vii) जौगड़ }
(viii) एर्रागुड़ी, आन्ध्रप्रदेश

❖ इन अभिलेखों की संख्या 14 है एवं यह आठ जगह से प्राप्त होते है। (इनकी संख्या 3 है, 8 जगहों से मिलते है एवं 14 बिन्दु /बातें मिलती है।)

❖ 13 वें बिन्दु पर कलिंग युद्ध का आक्रमण
(1 लाख मारे), (1.5 लाख बंदी बनाये)

❖ धौली, जौगड़ - पूरी प्रजा मेरी संतान के समान है।
पृथक कलिंग प्रज्ञापन :- 13 वें अभिलेख में अशोक कलिंग युद्ध का उल्लेख करता है। लेकिन धौली व जौगड़ के 13 वें अभिलेख में अशोक समस्त प्रजा को अपनी संतान बताता है।

2. लघु शिलालेख :-

(i) इनमें अशोक की व्यक्तिगत जानकारी मिलती है।
(ii) मास्की, गुर्जरा, नेट्टुर, उदेगोलम अभिलेख से अशोक के नाम की जानकारी मिलती है।
भाब्रू शिलालेख :- अशोक के धर्म की जानकारी मिलती है ।

स्तम्भलेख

1. वृहद स्तम्भलेख :- इनकी संख्या 7 है एवं 6 स्थानों से प्राप्त होते हैं।
(i) प्रयाग प्रशस्ति :- यह मूल रूप से कौशाम्बी में था।
अकबर ने इसे प्रयाग (इलाहाबाद) में स्थापित करवाया।
(ii) दिल्ली टोपरा अभिलेख :- एकमात्र अभिलेख जिसमें पूरे सात अभिलेख प्राप्त होते है।
सातवें अभिलेख में आजीवक सम्प्रदाय का उल्लेख मिलता है।
(iii) दिल्ली-मेरठ अभिलेख
(iv) लौरिया, नन्दनगढ़ } बिहार
(v) लौरिया, अरराज }
(vi) रामपुरवा }
2. लघु स्तम्भलेख :- इसमें अशोक की शासकीय घोषणाएँ मिलती है।
जैसे - सांची अभिलेख
सारनाथ अभिलेख

अशोक बौद्ध संघ में फूट डालने वालों को चेतावनी देता है और कहता है कि कैदी सफेद वस्त्र धारण करते हैं एवं कारागृह रहने योग्य स्थान नहीं है।

रूम्मिनदेई अभिलेख :- इसमें मौर्य साम्राज्य की आर्थिक स्थिति की जानकारी मिलती है।

3. गुहा लेख :- अशोक ने आजीवक साधनों हेतु गुफाओं का निर्माण करवाया।

अशोक ने आजीवक साधकों हेतु गुफाओं का निर्माण करवाया।

कर्णचोपड़
सुदामा
विश्वझोपड़ी

गुफाओं के नाम

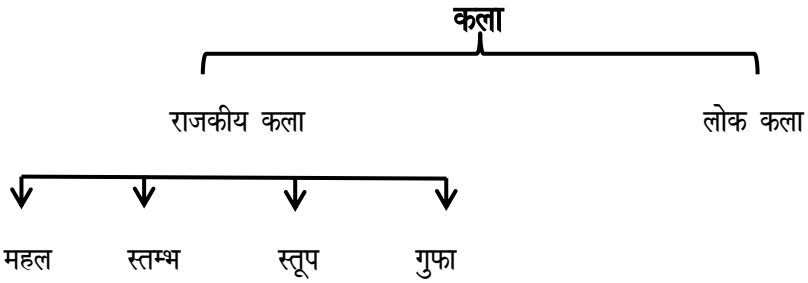

A. राजकीय कलाः-

(i) महल :-

- मेगस्थनीज तथा स्ट्रेबों चन्द्रगुप्त के महलों की प्रशंसा करते है।
- पाटलीपुत्र के नगर नियोजन की प्रशंसा करते हैं।
- 'एरियन' इन्हें एकवेतना एवं सुसा के महल से अत्यधिक सुंदर बताता है।
- चीनी यात्री फाहयान के अनुसार 'इस प्रकार के महलों' का निर्माण दैत्य कर सकते हैं।
- बुलन्दीबाग (पटना) से महलों के साक्ष्य मिलते हैं।

(ii) **स्तम्भ :-** सारनाथ स्तम्भ

- इसके फलक पर चार सिंह बने हुए है।
- इस पर भगवान बुद्ध संबंधित प्रतीक भी मिले है-
  - हाथी
  - सांड
  - घोड़ा
  - सिंह
- अशोक चक्र में 32 तीलियाँ है।
- यह सारनाथ के संग्रहालय में रखा गया है।
- यह भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है।
  - सांची स्तम्भ - चार शेर
  - रामपुरवा - सांड
  - संकिसा - हाथी
  - रूम्मिनदेई - घोड़ा

- कुछ इतिहासकारों के अनुसार अशोक के स्तम्भ डेरियस के स्तम्भों की नकल है।
- लेकिन वास्तविकता में दोनों में पर्याप्त असमानताएँ है।

अशोक	डेरियस
• एकाश्मक स्तम्भ	• पत्थरों को जोड़ कर बनाया गया।
• स्वतंत्र रूप से	• इमारतों के अंग
• यह सपाट/समतल है	• नालीदार/जिग-जैग
• उल्टा कमल	• सीधा कमल
• पशु आकृति निर्मित	• मानव आकृतियाँ निर्मित
• लेख युक्त	• लेख विहीन

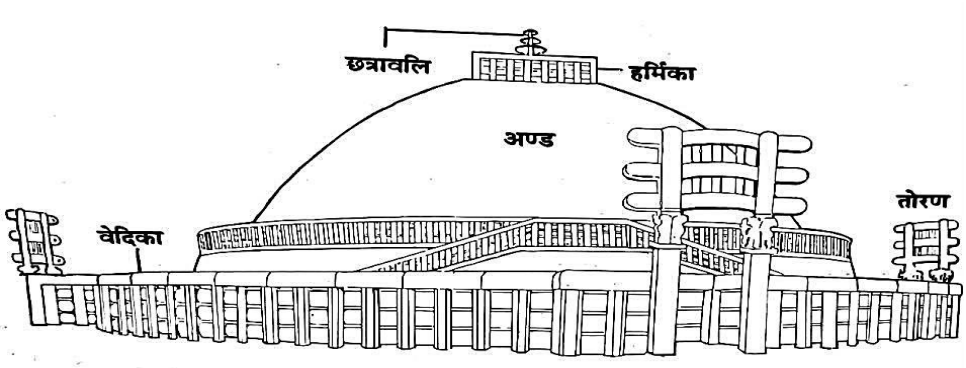

स्तूप वास्तु के विभिन्न अंग

(iii) **स्तूप** :-

- अशोक ने 84000 स्तूपों का निर्माण करवाया।

  प्रमुख स्तूप :-
- सांची स्तूप
  - इसका निर्माण मौर्यकाल में हुआ।
  - इसका विस्तार शुंग वंश के समय हुआ।
  - इसके तोरण द्वार पर भगवान बुद्ध के प्रतीक, शिक्षाएँ बुद्ध की घटनाओं का लौकिक चित्रण किया गया है।
  - धर्मराजिका स्तूप, सारनाथ
  - धर्मराजिका स्तूप, तक्षशिला
- स्तूप परिचय :-
  - स्तूप का पहला उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।
  - शाब्दिक अर्थ 'ढेर' होता है।
- प्रमुख स्तूप :-
  - पिपरहवा स्तूप -
    - ✓ इसे प्राचीनतम स्तूप माना जाता है।
    - ✓ इसमें भगवान बुद्ध के अवशेषों के साक्ष्य मिले थे।
- धमेख स्तूप
  - यह सारनाथ में स्थित है। निर्माण-गुप्तकाल में

- यह प्लेटफॉर्म पर नहीं बना हुआ है।
- यह ईंटों से निर्मित है।

- अमरावती स्तूप :-
  - यह संगमरमर का बना हुआ है।
  - निर्माण - व्यापारियों द्वारा

स्तूपों का प्रकार :-

(i) शारीरिक स्तूप
- इनकी संख्या - 8+1 है। (8 भगवान बुद्ध के अवशेष, 1 बर्तन)

(ii) पारिभोगिक स्तूप
- भगवान बुद्ध से संबंधित वस्तुएँ इसमें रखी गई है।
  जैसे- भिक्षापात्र, पादुकाएँ

(iii) उद्देशिका स्तूप
- भगवान बुद्ध से संबंधित स्थलों पर इनका निर्माण किया गया था।

(iv) पूजार्थक -
- आस्था के फलस्वरूप इनका निर्माण किया गया।

✍ चैत्य :-
- बौद्ध धर्म के पूजा गृह
- कार्ले के चैत्य प्रसिद्ध है।

✍ विहार :- बौद्ध धर्म के आश्रम

✍ गुफाएँ :- अशोक ने विश्वझोपड़ी, सुदामा, कर्णचौपड़ गुफाओं का निर्माण करवाया।
- दशरथ ने गोपिका गुफा का निर्माण करवाया।
- बराबर गुफाओं का निर्माण भी मौर्यकाल में हुआ।

✍ लोककला :-
- मथुरा के पास परखम से एक यक्ष की मूर्ति मिलती है जिसे मणिभद्र कहा जाता है।
- मथुरा के पास बड़ोढ़ा/बरोरा से एक यक्ष पटना के पास दीदारगंज से एक यक्षिणी की मूर्ति मिलती है। जिसे 'चामार गृहिणी' या 'चंवरगृहिणी' कहा जाता है।
- बुलंदीबाग से एक पहिया मिलता है।
- धौली, उड़ीसा में पत्थर को काटकर हाथी बनाया गया है।

मौर्योत्तरकालीन कला

- इस समय तीन मूर्तिकला शैलियों का विकास हुआ-
  1. गांधार शैली
  2. मथुरा शैली
  3. अमरावती शैली

गांधार शैली

- इस पर ईरानी, यूनानी एवं रोमन शैलियों का प्रभाव है। इसे विदेशी कला कहा जाता है।
- कुषाण शासकों ने इसे राजकीय संरक्षण प्रदान किया।
- इसमें बौद्ध धर्म से संबंधित मूर्तियों का निर्माण किया गया।
- भगवान बुद्ध की सर्वाधिक मूर्तियाँ इसी शैली में निर्मित है।
- यह यर्थाथवादी एव भौतिकवादी शैली है।
- भगवान बुद्ध को ग्रीक देवता भगवान 'अपोलो' के समान दिखाया गया है जिसमें भगवान बुद्ध को बलिष्ठ शरीर व घुंघराले बालों में दिखाया गया है।
- इसमें गेरूआ बलुआ पत्थर का प्रयोग किया गया है।
- प्रमुख केन्द्र :-
  - तक्षशिला, बामियान, भीमरान

मथुरा मूर्तिकला शैली :-

- इसे राजकीय संरक्षण प्राप्त था परन्तु इसका वास्तविक विकास लोककला के रूप में हुआ।
- इसमें हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म से संबंधित मूर्तियों का विकास हुआ।
- भगवान बुद्ध की प्रथम मूर्ति इसी शैली में निर्मित है।
- यह आध्यात्मिकता वादी शैली है।
- भगवान बुद्ध को दुबला-पतला व साधु के समान दिखाया गया है लेकिन बुद्ध के चेहरे पर अत्यधिक तेज दिखाया गया है।
- अधिकतर मूर्तियाँ पद्मासन अवस्था में है।
- इसमें लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग किया गया है।
- केन्द्र - मथुरा, सांची, सारनाथ

अमरावती शैली :-

1. इसे राजकीय संरक्षण प्राप्त था परन्तु वास्तविक विकास लोककला के रूप में हुआ।
2. इसमें हिन्दू धर्म, जैन धर्म व बौद्ध धर्म से संबंधित मूर्तियाँ बनी।
3. इसमें संगमरमर से मूर्तियों का निर्माण किया गया।
4. केन्द्र :- अमरावती, नागार्जुन

गुप्तकाल

गुप्तकालीन सिक्कों पर टिप्पणी :-

- चन्द्रगुप्त प्रथम ने विवाह प्रकार/श्री प्रकार/रानी-राजा प्रकार के सिक्के चलाये।
- समुद्रगुप्त ने 6 प्रकार के सिक्के चलाये।
  1. अश्वमेघ सिक्के
  2. वीणावादन सिक्के
  3. धनुर्धर सिक्के
  4. व्याघ्रहन्ता सिक्के
  5. परशु सिक्के
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने चाँदी के सिक्के चलाये।
- कुमारगुप्त ने सर्वाधिक सोने के सिक्के चलाये।
- कुमारगुप्त ने मयूर शैली के सिक्के चलाये।
  - कार्तिकेय भक्त (एकमात्र उत्तर भारत शासक)
- **प्राचीन भारत के सिक्कों पर टिप्पणी :-**
  - निस्क - ऋग्वैदिक कालीन व उत्तरवैदिक कालीन नाक आभूषण।
  - भारत के आरम्भिक सिक्कों को आहत/पंचमार्क सिक्के कहते हैं।
  - यूनानियों में लेख युक्त सिक्के चलायें
  - मौर्यकालीन सिक्के - सुवर्ण- सोने का सिक्का
    कार्षापण, धरण, पण - चाँदी के सिक्के
    भाषक, काकनी - ताँबे के सिक्के
  - कुषाण - शुद्ध सोने के सिक्के चलाये।
  - शक - विशेषता चाँदी के सिक्के (केवल चाँदी के सिक्के)
  - सातवाहन - सीसे एवं पोटिन के सिक्के चलाये।
  - गुप्त - सर्वाधिक सोने के सिक्के

साहित्य :-

धार्मिक साहित्य :-

1. रामायण
   - इसकी रचना वाल्मिकी ने की।
   - आरंभ में 6000 श्लोक थे।
   - कालांतर में 24000 हो गये। (वर्तमान में)
   - इसे 'चतुर्विंशसहस्त्र संहिता' कहा जाता है।
   - रामायण के अध्याय को 'काण्ड' कहते हैं।
   - रामायण में 7 काण्ड है -
     (i) बालकाण्ड
     (ii) अयोध्या काण्ड

(iii) अरण्य काण्ड
(iv) किष्किन्दा काण्ड
(v) सुन्दर काण्ड
(vi) लंका काण्ड/युद्ध काण्ड
(vii) उत्तर काण्ड

2. महाभारत

- रचना - वेदव्यास
- धार्मिक मान्यतानुसार भगवान गणेश ने इसे लिखा था।
- आरम्भ में 8000 श्लोक थे तब इसे ''जयसंहिता'' कहा जाता था।
- कालान्तर में 24000 श्लोक हो गये तब इसे ''भारत संहिता'' कहा जाता था।
- बाद में इसमें लगभग 100000 (1 लाख) श्लोक हो गये तब इसे ''महाभारत या शतसहस्त्र संहिता'' भी कहा जाता है।
- महाभारत के अध्याय को 'पर्व' कहा जाता है।
- इसमें 18 पर्व है।
- महाभारत के छठें पर्व में भगवद्गीता का उल्लेख मिलता है।
- भगवद्गीता में 18 अध्याय है। इसमें अवतारवाद का उल्लेख मिलता है।

गैर धार्मिक साहित्य -

1. कालिदास - 2 काव्य :-

(i) रघुवंश - भगवान राम के वंश की कहानी
(ii) कुमार संभव - शिवपुत्र कार्तिकेय की कहानी

दो अर्द्धकाव्य :-

(i) मेघदूत - पति की वेदना
(ii) ऋतुसंहार - पत्नी की विरह वेदना

नाटक

(i) मालविकाग्निमित्रम्-शुंग राजकुमार अग्निमित्र व मालविका की कहानी
(ii) विक्रमोर्वशीयम् - राजकुमार पुरूरवा एवं उर्वशी की कहानी
(iii) अभिज्ञान शाकुन्तलम्

- राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला की कहानी
- कालिदास की सर्वश्रेष्ठ एवं अन्तिम रचना
- प्रथम भारतीय पुस्तक जिसका यूरोपीय भाषा में अनुवाद हुआ।

2. भास :- नाटक

(i) स्वप्नवासवदत्ता :-

- वत्स के शासक उदयन एवं अवन्ति के शासक प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता की कहानी
- यह भारत का प्रथम नाटक था।

(ii) प्रतिज्ञायोगन्धरायण (स्वप्नवासवदत्ता का द्वितीय भाग)

(iii) चारूदत्तम

3. शुद्रक :-

(i) मृच्छकटिकम - मिट्टी की गाडी

प्रथम पुस्तक जिसमें एक आम आदमी को नायक बनाया गया है।

4. विष्णु शर्मा - पंचतंत्र-कूटनीति/राजनीति
5. वात्स्यायन :- कामसूत्र
6. अमरसिंह :- पुस्तक अमरकोष
7. वत्स भट्टी :- पुस्तक - रावणवध
8. माघ :- 'शिशुपालवध'
9. चन्द्रगोमिन - चन्द्रगोमिन व्याकरण
10. कामन्दक - नीतिसार

प्रश्न :- प्राचीन भारत की कला पर टिप्पणी कीजिए :-

गुप्तकालीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

✍ प्राचीन भारत का स्वर्णकाल है

आर्यभट्ट :-

1. इसने सर्वप्रथम बताया कि सूर्य सौरमण्डल का केन्द्र है एवं पृथ्वी व अन्य गृह उसके चारों ओर परिक्रमा करते हैं।
2. पृथ्वी का एक उपग्रह (चन्द्रमा) हैं।
3. आर्यभट्ट ने सूर्यग्रहण व चन्द्रग्रहण के कारण को भी बताया।
4. इसने पृथ्वी की त्रिज्या बताई।(व्यास)
5. इसने पाई (π) का मान दिया।
6. इसने त्रिभुज के क्षेत्रफल का मान दिया।
7. प्रथम व्यक्ति जिसने अपने नाम पर पुस्तक लिखी :-

   पुस्तक :- 1. आर्यभट्टियम्, 2. सूर्यसिद्धान्त 3. दसगीतिकासूत्र

   सूर्य सिद्धान्त- इसमें त्रिकोणमिति की जानकारी मिलती है।

वराहमिहिर :-

1. इसने खगोलशास्त्र, ज्योतिष शास्त्र का कार्य किया।
2. इसने फलित ज्योतिष एवं कुण्डली पर कार्य किया।
3. पुस्तकें :- पंचसिद्धान्तिका, वृहद संहिता, लघु संहिता, वृहद जातक

भास्कराचार्य :-

1. इन्होंने आर्यभट्ट की पुस्तकों पर कार्य किया । एवं उनकी व्याख्या की।

   पुस्तकें :- 1. वृहद् भास्कर्य 2. लघुभास्कर्य

ब्रह्मगुप्त :-

पुस्तक :- ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त, खण्ड खाद्यक

भास्कराचार्य द्वितीय :- यह महान गणितज्ञ थे।

पुस्तक - सिद्धान्त शिरोमणी

इसके 4 संस्करण है-

i. बीजगणित
ii. गणिताध्ययन
iii. गोलाध्ययन
iv. लीलावती - यह उनकी बेटी का नाम था। यह गणितज्ञ थी।

वाग्भट्ट :- पुस्तक -अष्टांगहृदय

पालकाव्य :- पुस्तक -हस्ति आयुर्वेद (हाथियों की चिकित्सा की जानकारी)

✍ दिल्ली के महरौली से चन्द्रगुप्त द्वितीय का लौहस्तम्भ प्राप्त होता है जो गुप्तकालीन रसायन विद्या का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। इसे कभी जंग नहीं लगता।

✍ गुप्तकाल में आयुर्वेद पर 'नवनीतकम' नामक पुस्तक की रचना की गई।

गुप्तकालीन मूर्तिकला :-

- गुप्तकाल में धातु की एवं पत्थर की मूर्तियाँ बनती थी।
- इस काल में मकरवाहिनी गंगा, कुर्मवाहिनी यमुना, अर्द्धनारीश्वर, हरिहर की मूर्ति बनना आरंभ हुई।
- हालांकि यह मूर्तियाँ मौर्योत्तर कालीन मूर्तियाँ जितनी सुंदर नहीं थी परन्तु इनमें नग्नता का अभाव है।
- यूपी के सुल्तानगंज से धातु की आठ फीट लम्बी मूर्ति प्राप्त होती है।
- प्रमुख शहर :- मथुरा, सारनाथ, काशी, सांची

गुप्तकालीन स्थापत्य कला :-

- आरंभिक मंदिर चबूतरानुमा हुआ करते थे।
- मंदिर स्थापत्य कला का वास्तविक विकास गुप्त काल में हुआ।
- चबूतरे के ऊपर एक कक्ष बनाया जाने लगा जिसे 'गर्भगृह' कहा जाता है। उसके ऊपर 'शिखर' एवं गर्भगृह से जुडा हुआ 'प्रदक्षिणा पथ' बनाया जाने लगा।
- शिखर क्रमशः ऊपर की तरफ छोटा होता जाता था।
- इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण झाँसी के पास देवगढ़ का दशावतार मंदिर है।
- इस समय पंचायतन शैली में भी मंदिरों का निर्माण होने लगा।
- इसके अन्य प्रसिद्ध मंदिर -
  - (i) भूमरा का शिव मंदिर
  - (ii) तिगवा का विष्णु मंदिर
  - (iii) नचना कुठार का पार्वती मंदिर
  - (iv) सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर
  - (v) भीतरी गाँव का विष्णु मंदिर
    - यह ईटों से निर्मित है।
    - 'ईटों का मंदिर' भी कहा जाता है।

गुप्तकालीन चित्रकला

- अजन्ता एवं बाघ की गुफाओं से गुप्तकालीन चित्र मिलते है।
- यहाँ से टेम्पेरा एवं फ्रेस्कों चित्र प्राप्त होते हैं।
- इन चित्रों में रंगों का सर्वाधिक सुन्दर मिश्रण किया गया है।
  अजन्ता की गुफाओं की खोज मद्रास प्रेसीडेंसी के सैनिकों ने की थी।
- अजन्ता में 29 गुफाएँ है। (जबकि ASI के अनुसार 30 है।)
- गुफा संख्या 1, 2, 9, 10 एवं 16, 17 के के चित्र सुरक्षित है।
- गुफा संख्या - 1, 2
  छठी व सातवीं शताब्दी की है।
  गुफा संख्या 01 में चालुक्य शासक पुलकेशिन II को फारस के दूत का स्वागत करते हुए दिखाया गया है।
- गुफा संख्या - 9-10

  मौर्योत्तर कालीन

2^{nd} BC से 2^{nd} AD मध्य की

- गुफा संख्या 16-17 :-
  इनका निर्माण वाकटक नरेश हरिषेण के मंत्री वराहदेव ने करवाया था।
- गुफा संख्या 16, 17 में मरणासन्न राजकुमारी का चित्र मिलता है।
- गुफा संख्या 17 को 'चित्रशाला' कहा जाता है।
  इसमें भगवान बुद्ध से संबंधित घटनाओं जैसे कि महाभिनिष्क्रमण महापरिनिर्वाण के चित्र मिलते हैं।
- गुफा संख्या 17 में एक माता एवं शिशु का चित्र मिलता है। जो भगवान बुद्ध की पत्नी यशोधरा एवं पुत्र राहुल का है।
- इन सभी गुफाओं में बौद्ध धर्म से संबंधित चित्र अधिक मात्रा में मिलते हैं।

बाघ की गुफाएँ :-

- इनकी खोज 'डेंजर फील्ड' ने की।
- बाघ की गुफाओं की संख्या 09 है।
- इनमे बौद्ध जैन व हिन्दू धर्म से संबंधित चित्र मिलते है।

गुप्तकालीन धर्म :-

- गुप्त शासकों का राजकीय धर्म - वैष्णव धर्म था।
- गुप्त शासक सहिष्णु शासक थे।
- समुद्रगुप्त ने श्रीलंका के शासक मेघवर्मन को बोधगया में विहार बनाने की अनुमति प्रदान की।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय का मंत्री वीरसेन शाव (शिव भक्त) या शैव धर्म का अनुयायी था। उसने उदयगिरी के शिव मंदिर को बड़ा दान दिया।
- इस समय शैव धर्म, वैष्णव धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं शाक्त (शक्ति) धर्म सभी का सामूहिक विकास हुआ।
- हरिहर, अर्द्धनारीश्वर, मकरवाहिनी गंगा, कर्मवाहिनी यमुना की आराधना होने लगी।
- षड़दर्शन का विकास भी इसी काल में हुआ।

दर्शन

आस्तिक (षड़दर्शन)	नास्तिक
1. पूर्व मीमांसा	1. बौद्ध
2. उत्तर मीमांसा	2. जैन
3. सांख्य	3. चार्वाक
4. योग	
5. न्याय	
6. वैशेषिक	

आस्तिक दर्शन :-

- वे दर्शन जो वेदों को नित्य और प्रमाणिक मानते हैं। आस्तिक दर्शन कहलाते हैं।
- इनकी संख्या 6 है।

नास्तिक दर्शन :-

- वे दर्शन जो वेदों को नित्य एवं प्रमाणिक नहीं मानते हैं, नास्तिक दर्शन कहलाता है।

आस्तिक दर्शन

1. **पूर्व मीमांसा** :-

आचार्य/संस्थापक - जैमिनी

प्रमुख आचार्य - कुमारिल भट्ट प्रभाकर

- यह कर्मकाण्ड पर विश्वास करते हैं।
- इनके अनुसार यदि सही विधि विधान से यज्ञ किया जाये तो फल अवश्य मिलता है।
- इनका दर्शन मुख्य रूप से वेदों एवं ब्राह्मण साहित्य पर आधारित है।
- यह अनीवश्वरवादी दर्शन है।

2. **उत्तर मीमांसा** :-

संस्थापक - बादरायण

प्रमुख आचार्य - शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, माध्वाचार्य, निम्बार्काचार्य, वल्लभाचार्य

- इनका दर्शन मुख्य रूप से आरण्यक एवं उपनिषद पर आधारित है।
- यह ज्ञान मार्ग में विश्वास करते हैं।

शंकराचार्य

- इन्होंने अद्वैतवाद मत/दर्शन का प्रतिपादन किया।
- शंकर के अनुसार 'ब्रह्म सत्य एवं जगत मित्था है।'
- माया के कारण हमें जगत का आभास होता है।
- शंकर ने ब्रह्म एवं जगत में तीनों भेदों सजातीय भेद, विजातीय भेद, स्वगत भेद को अस्वीकार किया है।
- शंकर ब्रह्म को निर्गुण, निराकर, निर्विशेष व निर्वचनीय बताते है।
- शंकर ब्रह्म को सत्-चित् एवं आनन्द (सच्चिदानंद) के आस-पास की अवस्था बताता है।

रामानुजाचार्य :-

- विशिष्ट अद्वैतवाद का प्रतिपादन किया।
- रामानुज ब्रह्म एवं जगत में स्वगत भेद को स्वीकार करते हैं।

3. **सांख्य दर्शन** :-

- प्रवर्तक- कपिल मुनि (कोलायत, बीकानेर-आश्रम)
- यह द्वैतवादी दर्शन है।
- पुरूष एवं प्रकृति मिलकर जगत का निर्माण करते है।
- यह विकासवादी दर्शन है।
- यह सृष्टिवाद को नहीं मानते हैं।
- यह अनीश्वरवादी दर्शन है।
- सांख्य का शाब्दिक अर्थ - सम्यक ज्ञान (सही ज्ञान)
- यह योगदर्शन का जुड़वा दर्शन है।

4. **योग दर्शन** :-

- प्रतिपादक - पतन्जलि
- योग का शाब्दिक अर्थ - जोड़ना होता है।

- 'चित्तवृत्ति निरोध ही योग है।'
- गीता के अनुसार 'कर्म में कुशलता ही योग है।'
- चित्तवृत्ति निरोध हेतु पतन्जलि अष्टांगिक मार्ग बताते हैं।
  1. यम 2. नियम 3. आसन 4. प्राणायाम 5. प्रत्याहार
  6. धारणा 7. ध्यान 8. समाधि
- यह सांख्य दर्शन का जुड़वा दर्शन है।

5. **न्याय दर्शन** :-
- प्रतिपादक - गौतम ऋषि
- न्याय को 'भारतीय दर्शन का तर्कशास्त्र' कहा जाता है।
- न्याय दर्शन ईश्वर के लिए भी प्रमाण देता है।
- यह (न्याय) ज्ञान के चार साधनों को मानते हैं-
  1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. शब्द 4. उपमान (तुलना से ज्ञान)
- इसे 'वेशैषिक दर्शन का जुड़वा दर्शन' कहा जाता है।

6. **वैशेषिक दर्शन** :-
- प्रवर्तक - कणाद ऋषि/उलूक
- इसे 'औलुक्य दर्शन' भी कहा जाता है।
- यह परमाणुवाद का सिद्धान्त देते हैं।
- यह न्याय दर्शन का जुड़वा दर्शन है।

नास्तिक दर्शन :-

चार्वाक :-
- प्रतिपादक-देवताओं के गुरू बृहस्पति
- अन्य मान्यतानुसार चार्वाक ऋषि ने इसका प्रतिपादन किया।
- चारू+वाक = चावार्क
- इसे 'लोकायुक्त दर्शन' भी कहा जाता है।
- यह अनीश्वरवादी दर्शन है।
- यह आत्मा, कर्मफल पुनर्जन्म को नहीं मानते ।
- आत्मा को 'पान' के उदाहरण द्वारा समझाया है।
- केवल दो पुरूषार्थ को मानते है-
  1. अर्थ 2. काम
- यह भौतिकवादी एवं सुखवादी दर्शन है।
- यह 'खाओ, पीयो और विवाह करो' में विश्वास रखते है।
- ज्ञान प्राप्ति का एक साधन प्रत्यक्ष को मानते है।
- केवल चार तत्वों को मानते है-
  1. पृथ्वी 2. जल 3. वायु 4. अग्नि

हर्ष का सांस्कृतिक योगदान :-

1. हर्ष एक विद्वान शासक था।
2. इसने 1. नागानंद 2. रत्नावली 3. प्रियदर्शिका की रचना की
3. कन्नौज में 'सर्वधर्म सम्मेलन' का आयोजन करवाया।
4. यह प्रयाग में प्रत्येक 5 वर्ष पश्चात् महामोक्ष परिषद् का आयोजन करवाता था। एवं अपना सब कुछ दान में दे देता था।
5. इसने अनेक विद्वानों को आश्रय दिया -

   बाणभट्ट - 1. हर्षचरित 2. कादम्बरी 3. चण्डीशतक 4. पार्वती परिणय

   मयूर - 1. सूर्यशतक

संगमकालीन साहित्य :-

- दूसरे संगम में तोल्लकापियर ने तोल्लकापियम (तमिल व्याकरण) का संकलन किया।
- तीसरे संगम में भजन संग्रहों एतुवोके व पत्तुपातु का संकलन किया।

	लेखक	पुस्तक
1.	इलंगो आदिगल	शिल्पादिकरम यह महिला प्रधान पुस्तक है। इसका शाब्दिक अर्थ - नुपूर की कहानी इसमें कणग्गी (पत्नी) एवं कोवलम (पति) की कहानी है।
2.	सितले सत्तनार	मणिमेखले मणि कोवलन व माधवी की पुत्री थी जो बौद्ध भिक्षुणी बन गई।
3.	तिरून्तक देवर	जीवक चिन्तामणि
4.	तिरूवल्लुवर	कुरूल इसमें तमिल व्याकरण की जानकारी मिलती है।

पल्लव शासकों का सांस्कृतिक योगदान

- द्रविड़ मंदिर स्थापत्य शैली का आरम्भ पल्लव वंश से माना जाता है।
- पल्लव शैली को तीन भागों में विभाजित किया जाता है-

  1. मण्डप 2. रथ मंदिर 3. मंदिर

- इसका विकास चार चरणों में हुआ-

1. **महेन्द्रवर्मन शैली** :-

- इस समय गुफा मंदिरों का निर्माण किया गया जिन्हें मंडप कहा जाता था।
- इसमें स्तम्भ युक्त एक या दो कमरें है।

2. **नरसिंहवर्मन प्रथम/मामल्ल शैली** :-

- इसमें तीन या चार कक्षों वाले मण्डपों का निर्माण किया गया।
- नरसिंहवर्मन ने मामल्लपुरम (महाबलिपुरम) नामक शहर बसाया।
- उसने वहाँ आठ रथ मंदिरों का निर्माण करवाया, जिन्हें सप्तपेंगौडा या पाण्डवरथ कहा जाता है।ये एकाश्मक पत्थर से बने हुए है।

इसमें युधिष्ठिर का रथ -सबसे सुन्दर अलंकृत -

- भीम का रथ, अर्जुन का रथ, नकुल-सहदेव का रथ, द्रौपदी का रथ (सबसे साधारण)

3. **नरसिंहवर्मन द्वितीय/राजसिंह शैली** :-

- इसमें स्वतंत्र मंदिरों का निर्माण होने लग गया।
- महाबलीपुरम का तटीय मंदिर इस शैली का प्रथम मंदिर है।
- बैकुंठ पेरूमल एवं तंजौर का कैलाश मंदिर अन्य प्रसिद्ध मंदिर है।

4. नन्दीवर्मन शैली :-

- पल्लव स्थापत्य कला में गिरावट आयी।
- इस समय छोटे-छोटे मंदिरो का निर्माण होने लगा।
- हालांकि अलंकरण पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा।
- प्रमुख मंदिर - मंतगेश्वर/मुक्तेश्वर मंदिर
- पल्लव शासक महेन्द्रवर्मन ने मतविलासप्रहसन भगवत्ज्जुदियम् नामक पुस्तकों की रचना की।
- पल्लव शासकों ने भारवि (पुस्तक-किरातअर्जुनियम) एवं दाण्डिन (पुस्तक - दशकुमारचरित एवं काव्यादर्श) जैसे विद्वानों को संरक्षण दिया।
- पल्लव शासकों ने शिक्षा के केन्द्रों का निर्माण किया, जिन्हें 'घटिका' कहा जाता है।
- पल्लव शासकों के समय आलवार तथा नयनार संतों ने भक्ति आंदोलन को आरम्भ किया।

चालुक्य शासकों का सांस्कृतिक योगदान :-

- चालुक्य कला के तीन प्रमुख केन्द्र है।

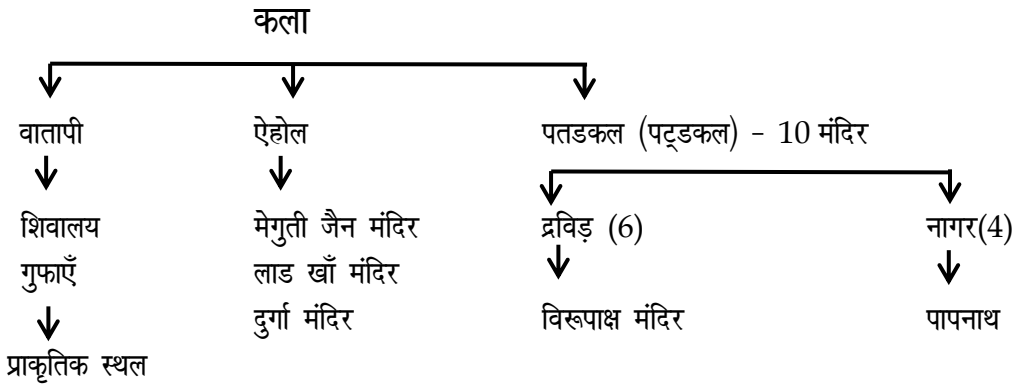

- ऐहोल को 'मंदिरों की नगरी' कहा जाता है।
- मेगुती जैन मंदिर का निर्माण रविकीर्ति ने करवाया था।
- पुलकेशिन द्वितीय के मंत्री गंगराज दुर्विनीत ने 'शब्दावतार' पुस्तक (व्याकरण) की रचना की।
- पण्डित उदयदेव ने 'जैनेन्द्र व्याकरण' की रचना की।
- सोमदेव सूरी ने 'नीति वाक्यामृत' की रचना की।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने चालुक्यों को शिक्षा का व्यसनी बताया है।

ऐहोल अभिलेख :- (कर्नाटक)

- इसे रविकीर्ति ने लिखा है।
- इसमें पुलकेशिन द्वितीय द्वारा हर्ष को पराजित करने की जानकारी है।
- इसमें महाभारत का भी उल्लेख मिलता है।
- रविकीर्ति स्वयं की तुलना कालिदास एवं भारवि से करता है।
- इसकी भाषा संस्कृत एवं लिपि-दक्षिणी ब्राह्मी है।

एरण अभिलेख :- (मध्यप्रदेश)

- गुप्तकालीन अभिलेख
- 510 AD
- सतीप्रथा का पहला उल्लेख मिलता है।

चोल शासकों का सांस्कृतिक योगदान

चोल

पल्लव प्रभाव

विजयालय ने नाथमलाई (नात्तमलाई) नामक स्थान पर चोलेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।

परान्तक प्रथम ने श्रीनिवास नल्लुर नामक स्थान पर कोरंगनाथ मंदिर का निर्माण करवाया।

चोल प्रभाव

1. शासक-अरिमोलिवर्मन
   स्थान-तंजौर में
   मंदिर-वृहदेश्वर का निर्माण करवाया ।
   (राजराजेश्वर मंदिर भी कहा जाता है।)
2. राजेन्द्र प्रथम ने गंगैकोण्ड-चोलपुरम में गंगेकोण्डचोलेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।

- अरिमोलिवर्मन द्वारा निर्मित वृहदेश्वर मंदिर का विमान अत्यन्त विशिष्ट है। यह दक्षिण भारत का सबसे ऊँचा मंदिर है।
- राजेन्द्र-प्रथम ने गंगेकोण्डचोलपुरम नगर बसाया। गंगेकोण्डचोलम् तालाब बनवाया।
- चोल शासकों के समय नटराज की मूर्ति बनना प्रारंभ हुई। इनकी मुख्य विशेषता है।

गुर्जर प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल के गुरू राजशेखर की पुस्तके :-

1. काव्य मीमांसा
2. विशाल भंजिका
3. कर्पूर मंजरी
4. बाल रामायण
5. हर विलास

मंदिर निर्माण शैलियाँ

1. नागर शैली :-

- इस मंदिर में -
  (i) गर्भगृह (ii) अर्द्धमण्डप
  (iii) मण्डप (iv) गर्भगृह के आगे स्तम्भों पर टिका हुआ क्षेत्र/हॉल
  (v) अंतराल (vi) शिखर (गर्भगृह पर जो क्रमशः ऊपर की तरफ छोटा होता जाता है।)

मुख्य विशेषताएँ

(i) ऊँचा चबूतरा
(ii) वर्गाकार चबूतरा
(iii) मंदिर की बाहरी दीवारों पर अप्सराओं एवं यक्षों की मूर्तियाँ
(iv) स्तम्भों पर घण्टियों का अलंकरण
(v) पंचायतन शैली में निर्मित (आरम्भिक मंदिर)

प्रमुख मंदिर :-

(i) ग्वालियर का सहस्त्रबाहु मंदिर
(ii) खजुराहों का लक्ष्मण मंदिर
(iii) कंदारिया महादेव मंदिर
(iv) नागदा का सहस्त्रबाहु (सास-बहू) मंदिर

2. द्रविड़ मंदिर :-

इसमें -

1. गर्भगृह 2. मण्डप 3. महामण्डप 4. विमान (यह अष्टकोणीय एवं पिरामिडाकार होता है।)

- मंदिर का निर्माण विशाल प्रांगण में किया जाता है।
  इसमें (प्रांगण में) मुख्य मंदिर के अलावा छोटे मंदिर, तालाब, पेड-पौधे एवं गोपुरम होते हैं।
- मंदिर में विभिन्न रंगों का प्रयोग
- सभी दक्षिण भारत मंदिर

प्रमुख मंदिर -

(i) मीनाक्षी मंदिर, मदुरई
(ii) विरूपाक्ष मंदिर, विजयनगर
(iii) तंजौर का वृहदेश्वर मंदिर

3. बेसर शैली :-

- मंदिर निर्माण नागर शैली एवं अलंकरण द्रविड़ शैली में किया जाता है।
- होयसल शासकों के मंदिर

पाल वंश का सांस्कृतिक योगदान

- अंतिम वंश जिसने बौद्ध धर्म को संरक्षण प्रदान किया।
- गोपाल ने 'ओदन्तपुरी विहार' का निर्माण करवाया।
- धर्मपाल ने 'विक्रमशिला विश्वविद्यालय' का निर्माण करवाया जिसे तुर्क सेनापति बख्तियार खिलजी ने जला दिया था।
- धर्मपाल ने सोमापुरा महाविहार का निर्माण करवाया।
- रामपाल ने संध्याकर नंदी को संरक्षण प्रदान किया जिसने रामपाल चरित की रचना की।

बौद्ध व जैन धर्म में समानताएँ :-

- दोनों नास्तिक दर्शन है।
- वेदों को नहीं मानते ।
- अनीश्वरवादी धर्म/दर्शन
- धार्मिक आडम्बरों, कर्मकाण्डों, अंधविश्वासों का विरोध किया।
- वर्णव्यवस्था एवं सामाजिक असमानता का विरोध
- नैतिक मूल्यों (सत्य, अहिंसा आदि) पर अत्यधिक बल दिया है।
- कर्मफल सिद्धान्त एवं पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं।
- संस्थापक क्षत्रिय राजकुमार थे।
- अनेकानेक शाखाओं में विभाजित हुए।

असमानताएँ

बौद्ध	जैन
बौद्ध धर्म अनित्य आत्मा में विश्वास करता है।	जैन नित्य आत्मा में विश्वास करते है।
इनके अनुसार सभी वस्तुओं का अस्तित्व क्षणभर के लिए होता है।	जैन वस्तुओं में नित्य व अनित्य दोनों गुणों को मानते हैं।
बौद्ध मध्यम मार्ग को मानते है।	जैन अतिवादी होते है। वे पूर्णतया सत्य व अहिंसा को मानते थे।
जाति व्यवस्था के विरोधी	जाति व्यवस्था के समर्थक
बौद्धों ने पालि भाषा को महत्व दिया।	जैनों ने प्राकृत भाषा को महत्व दिया।
बौद्ध धर्म विदेशों में भी फैला	जैन धर्म भारत तक सीमित रहा।

राष्ट्रकूट :-

- राष्ट्रकूट शासक कृष्ण-प्रथम ने एलोरा के कैलाश मंदिर का निर्माण करवाया।
- यह एकाश्मक मंदिर है।
- एलोरा में 34 गुफाएँ है। जिसमें हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म से संबंधित चित्र है।
- इन गुफाओं का निर्माण राष्ट्रकूट शासकों ने करवाया है।
- राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष एक विद्वान शासक था। उसने 'कविराजमार्ग' की रचना की।
- इसके कुछ दरबारी विद्वान/कवि थे-
  1. जिनसेन :- आदिपुराण

2. महावीराचार्य :- गणितसार संग्रह
3. शक्तायन :- अमोघवृत्ति

प्राचीनकाल में धर्म सुधार के कारण

1. **ब्राह्मणों का प्रभुत्वः-**
   - धार्मिक कर्मकाण्डों की बढ़ती संख्या
   - वेदों को पढ़ने व व्याख्या करने का विशेषाधिकार
   - आर्यो का प्रवृत्तिमार्गी होना।
2. **बहुदेववाद की संकल्पना**

   धार्मिक ग्रंथो का सामान्य बोलचाल की भाषा (पालि, प्राकृत) में न होना।
3. **औपनिषदिक विचारधारा :-**
   - ज्ञान प्राप्ति से मोक्ष संभव
   - अंहिसा व आचरण की पवित्रता पर जोर
4. **यज्ञ एवं कर्मकाण्डों की बढ़ती जटिलता**
   - पुरोहितों की बढ़ती संख्या व उन्हें देवता तुल्य मानना
   - पुनर्जन्म व स्वर्ग-नरक की धारणाएँ
5. **वर्गो का आपसी संघर्ष :-**
   - कर्म के बजाय जन्म को वर्ण व्यवस्था का आधार मानना, ब्राह्मण व क्षत्रियों में श्रेष्ठता को लेकर हुआ संघर्ष (शतपथ ब्राह्मण)

प्राचीन काल में स्थापत्यकला

1. **सिंधुघाटी सभ्यता** :- नगर संयोजन, आवास विन्यास, प्राकार की संरचना, पक्की ईंटो, पत्थर और मिट्टी का प्रयोग, ईंटों के विभिन्न आकार, दीवार बनाने की तकनीक, कदलीकरण (तोडेदार) मेहराब का प्रयोग, जल निरोधक माध्यम के प्रयोग और फर्श की बनावट इत्यादि में हड़प्पा सभ्यता का वास्तुगत चातुर्य प्रकट होता है।

   उदा. महास्नानागार, विशाल अन्नागार, सभा भवन, दुर्ग का प्राकार (मोहनजोदड़ो); लोथल का गोदीवाडा (डाकयार्ड), बावड़ियाँ (धौलावीरा)

2. **मौर्यकाल** :- स्थापत्य और कला के क्षेत्र में पत्थर का प्रयोग सर्वप्रथम इसी युग में प्रारंभ हुआ। पत्थर के कठोर माध्यम में कलाकृतियों का निर्माण होने के कारण मौर्य युग और उसके अनन्तर कला अवशेष मिलने प्रारंभ हो जाते है।

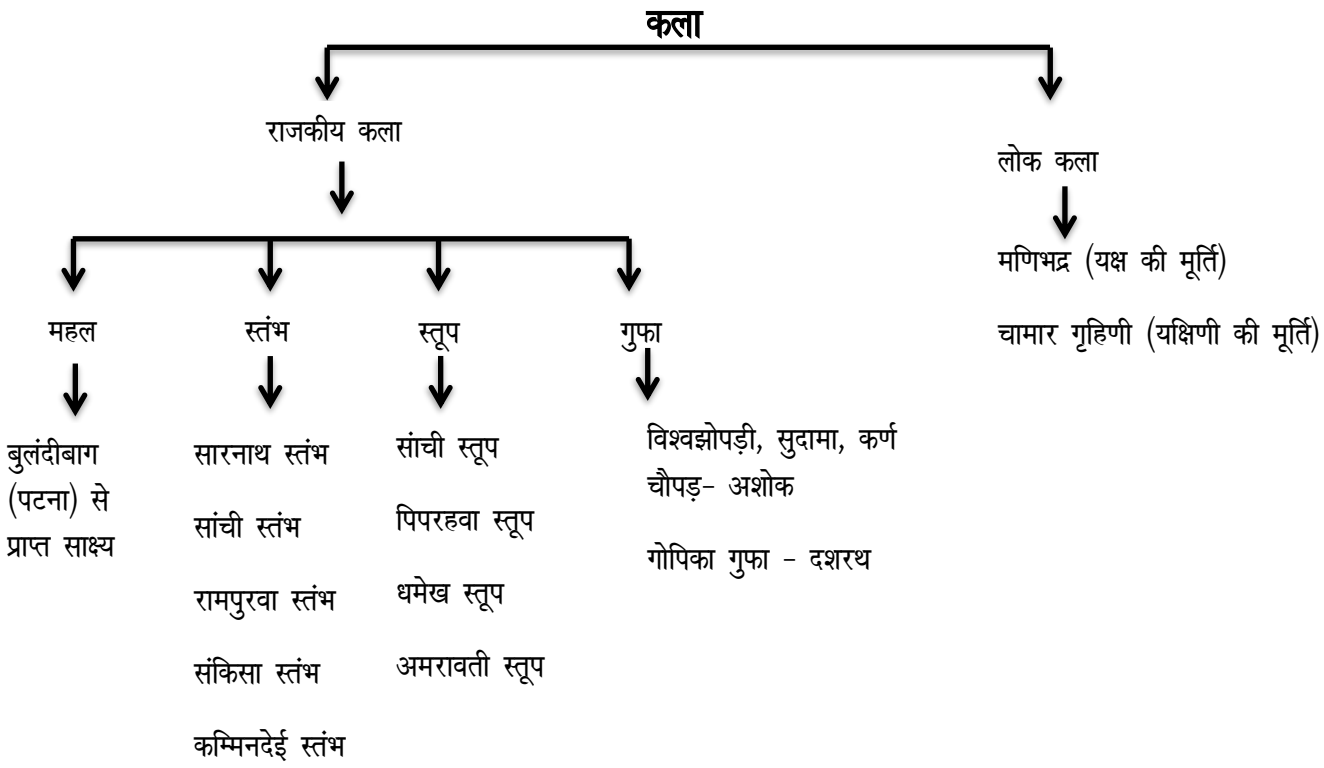

3. बौद्ध स्थापत्य - इसके अंतर्गत स्तूप, चैत्य, विहार उल्लेखनीय है।

स्तूप :- बुद्ध के अस्थि अवशेषों से संबंधित वस्तुओं व स्थलों पर निर्मित किये गए। इनके विकास एवं विस्तार को निम्नलिखित आधार पर समझा जा सकता है।

उत्तर भारत में स्तूपों का स्वरूप

- भरहुत, सांची , मथुरा
- मौर्य युग में स्तूप के 5 भाग थे (मेधि, अण्ड, वेदिका, हर्मिका, छत्रावली)
- शुंग युग में स्तूप की वेदिकाओं में एक या चार तोरण द्वार लगाए गए।
- सांची स्तूप अभी भी प्राचीन अवस्था में विद्यमान है।

दक्षिण का स्तूप स्थापत्य

- कृष्णा व कावेरी घाटी में स्तूप पूजा का महत्व था।
- प्रमुख स्थान-अमरावती, गोली, नागार्जुनीकोण्ड, जग्ग्यापेठ।

उत्तर-पश्चिम में स्तूपों का निर्माण

प्रमुख केन्द्र - धर्मराजिका स्तूप, तक्षशिला, पुष्कलावती, नगरहार, स्वातघाटी, सहरीहिलोत, तख्तेबाही।

- वर्तमान में यह स्तूप अफगानिस्तान और पाकिस्तान में स्थित है।

चैत्यः- बौद्ध संघ का पूजा गृह

- प्रमुख केन्द्र - मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र राज्यों में अवस्थित

Eg. - भाजा का चैत्य (सर्वाधिक प्राचीन), कार्ले का चैत्य (हीनयान सप्रदाय से संबंधित)

विहार :- बौद्ध संघ का निवास स्थल / बौद्ध मठ।

Eg. मूलगंध कुटी विहार, गौतमीपुत्र विहार (नासिक, हीनयान संप्रदाय से संबंधित), नहपान विहार, वेडसा का पर्वतीय विहार, मामल्लपुर का चौमंजिला विहार।

4. गुप्तकाल :- मंदिर स्थापत्य का वास्तविक विकास गुप्तकाल में हुआ। इसके अंतर्गत चबूतरा, शिखर एवं गर्भगृह से जुड़ा प्रदक्षिणापथ अल्लेखनीय है।

Eg. सारनाथ धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में बैठी बुद्ध प्रतिमा, साढ़े सात फीट ऊँची अभयमद्रा में खड़ी बुद्ध मूर्ति, बर्मिंघम म्यूजियम (बिहार के सुल्तानगंज से प्राप्त)

- उपर्युक्त के अतिरिक्त दक्षिण भारत में स्थापत्य के क्षेत्र में मंदिर स्थापत्य शैली का निर्माण हुआ, जो निम्नानुसार है-

5. पल्लवकाल :-द्रविड़ मंदिर स्थापत्य शैली का प्रारंभ

विशेषताएँ - गुफा मंदिर, रथ मंदिर, मण्डप निर्माण, स्वतंत्र मंदिर निर्माण, शिक्षा के केन्द्रों का निर्माण (घटिका)

Eg. आठरथ मंदिर (महाबलिपुरम्), बैकुण्ठ पेरूमल, कैलाश मंदिर (तंजौर), मतंगेश्वर मंदिर।

6. चालुक्य काल -

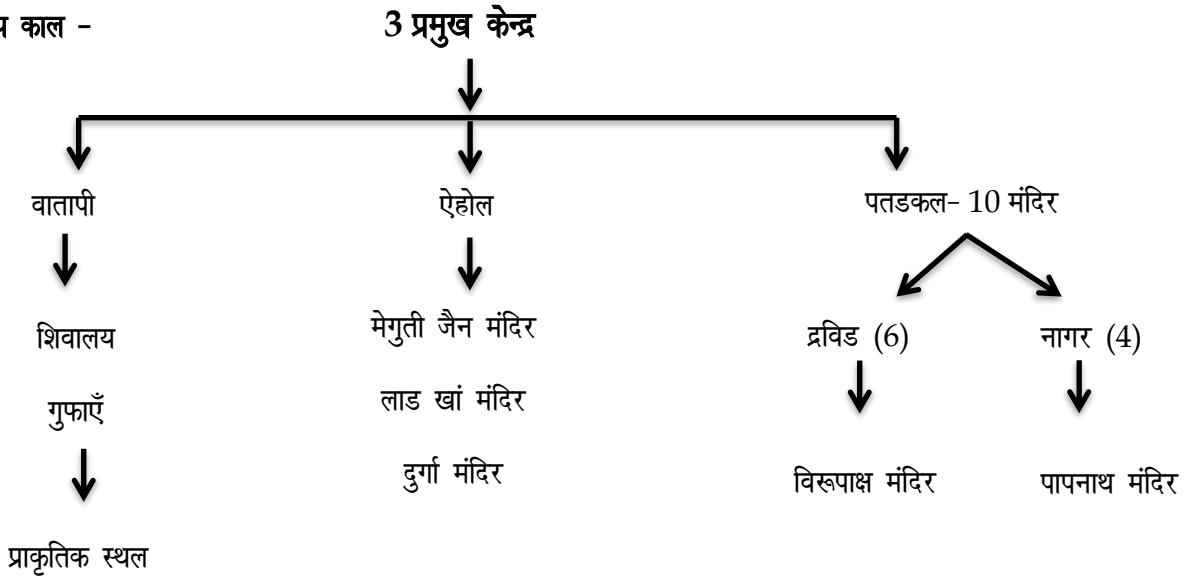

7. **चोल काल** :- इनके समय मंदिर निर्माण शैली में 'विमान निर्माण' अत्यंत विशिष्ट था।

Eg. वृहदेश्वर मंदिर (राजराज- I) ; गंगेकोण्डचोलपुरम् मंदिर व नगर का निर्माण, गंगेकोण्डचोलम् तालाब का निर्माण (राजेन्द्र I) हुआ।

8. **पाल वंश** :-ओदन्तपुरी (गोपाल) व सोमापुरा (धर्मपाल) में विहार का निर्माण; विक्रमशिला विश्वविद्यालय का निर्माण (धर्मपाल)

9. **राष्ट्रकूट वंश :-** एलोरा का कैलाश मंदिर, जो एकाश्मक है, राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण- I ने बनवाया।

- एलोरा में निर्मित 34 गुफाएँ हिंदू, जैन व बौद्ध धर्म से संबंधित है।

प्राचीनकाल में मूर्तिकला

1. हड़प्पाकालीन
- धातु, शैलखड़ी एवं मृण की मूर्तियाँ
- मोहनजोदड़ो - धातु की नर्तकी, पुरोहित राजा की मूर्ति (शैलखड़ी)
- दैमाबाद - धातु का रथ
- हड़प्पा - इक्कागाड़ी
- लोथल- घोड़े की मृण्मूर्ति

2. वैदिक काल
- मूर्ति पूजा का प्रचलन था- ब्रह्मा, विष्णु, महेश महत्वपूर्ण देवता थे। (उत्तर वैदिक काल)

3. महाजनपदकाल
- महायान -मूर्तिपूजा के समर्थक

4. मौर्यकाल
- सारनाथ स्तंभ के शीर्ष पर बने 4 सिंहों की आकृतियाँ

लोककला -परखम से प्राप्त यक्ष की मूर्ति (मणिभद्र), दीदारगंज से प्राप्त यक्षिणी की मूर्ति (चामार गृहिणी), धौली से प्राप्त हस्ति मूर्ति

5. मौर्योत्तर काल
- मूर्तिकला की 3 शैलियाँ- गांधार, मथुरा, अमरावती

6. गुप्तकाल
- धातु व पत्थर की मूर्तियाँ
- अर्द्धनारीश्वर, हरिहर की मूर्ति
- मकरवाहिनी गंगा, कुर्मवाहिनी यमुना की मूतियाँ

7. गुप्तोत्तर काल
- बक्सर में स्थित 1400 साल पुरानी काले चिकने पत्थर की सूर्य प्रतिमा

8. चोल काल
- नटराज की मूर्ति

प्राचीनकाल में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

1. **सिंधु सभ्यता :-** मृदभाण्डों को निर्माण, कच्ची व पक्की ईंटों का 4 : 2 : 1 के अनुपात में निर्माण, मिश्र धातु बनाने में माहिर, मनके बनाने के कारखाने (चन्हूदड़ों, लोथल)
2. **वैदिक काल :-** शुल्वसूत्र में यज्ञ वेदिका की लंबाई × चौड़ाई × ऊँचाई के बारे में बताया गया। 100 पतवार वाले जहाज का उल्लेख मिलता है।
3. **महाजनपदकाल** :- ज्योतिष विज्ञान का विकास हुआ जैसे- कैलेण्डर की अवधारणा विकसित हुयी। सांचे में ढलने वाले सिक्कों का विकास हुआ।
4. **मौर्यकाल :-** सम्राट अशोक द्वारा निर्मित लाट स्तम्भ, जिनकी लंबाई 40 से 50 फीट है इनके ऊपर पशु आकृति, अवांगमुखी कमल बनाए गए, जो तत्कालीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के अद्वितीय उदाहरण है। ग्रांड ट्रंक रोड का निर्माण इसी युग में हुआ था।
- अकाल राहत कार्यो हेतु इंजी. पुष्यगुप्त वैश्य द्वारा किया गया। सुदर्शन झील का निर्माण उल्लेखनीय है।

5. **मौर्योत्तर काल :-** सांची के स्तूप के पुनर्निर्माण में पत्थरों का प्रयोग किया गया। सातवाहन शासक नाव निर्माण से परिचित थे। जूनागढ़ अभिलेख सुदर्शन झील के निर्माण व मरम्मत की जानकारियां उपलब्ध करवाता है। 46 ई. में हिपालस ने मानसूनी हवाओं की खोज की थी। कनिष्क का समकालीन सुश्रुत, शल्य चिकित्सक था।
6. **गुप्तकाल :-** विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की दृष्टि से गुप्तकाल स्वर्णिम युग था, जिसे निम्न बिंदुओ के माध्यम से समझा जा सकता है-

आर्यभट्ट :- शून्य, दशमलव प्रणाली, सूर्यग्रहण-चंद्रग्रहण के वास्तविक कारणों से परिचित करवाया। पाई (Π) का मान व पृथ्वी की त्रिज्या बतायी। पुस्तके - आर्यभट्टीयन, सूर्य सिद्धान्त, दशगीतिका सूत्र।

वराहमिहिर :- ज्योतिषशास्त्री, पुस्तके-पंचसिद्धान्तिका, लघु संहिता, वृहत् संहिता।

भास्कराचार्य :- पुस्तकें - लघु भास्कर्य, वृहत भास्कर्य।

भास्कराचार्य- II :- गणितज्ञ, अपनी पुत्री के नाम पर 'लीलावती' पुस्तक की रचना की।

ब्रह्मगुप्त :- 'भारत के न्यूटन' नाम से प्रसिद्ध, भीनमाल से संबंधित एवं अरब प्रदेश में विख्यात, पुस्तकें-ब्रह्म स्फुट सिद्धांत तथा खंड खाद्यक।

नागार्जुन :- 'भारत के आइन्सटीन' नाम से लोकप्रिय शून्यवाद के प्रवर्तक, पुस्तकें-माध्यमिकारिका व प्रज्ञापारमितासूत्र।

- दिल्ली में स्थित मेहरोली का लौह स्तंभ तत्कालीन प्रौद्योगिकी के महत्व को दर्शाता है।
- पशुचिकित्सा के क्षेत्र में की गई प्रगति भी तत्कालीन रचित पुस्तकों से पता चलती है - जैसे - अष्टांगहृदय (वागभट्ट), हस्तायुर्वेद (पालकाप्य)
- दक्षिण भारत में पल्लव, चोल, चालुक्य तथा राष्ट्रकूट शासकों द्वारा निर्मित मंदिर स्थापत्य में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का प्रयोग परिलक्षित होता है - जैसे-अरिमोलिवर्मन द्वारा निर्मित वृहदेश्वर मंदिर का विमान अत्यंत विशिष्ट है, इसी तरह मामल्ल शैली के रथ मंदिर एकाश्मक पत्थर के निर्माण के कारण दृष्टव्य है।